अध्याय
17

बच्चे काम पर जा रहे हैं

© JCERT not to be republished

शेखर जोशी।

कवि-परिचय

1 .राजेश जोशी का जन्म 1946 ईस्वी में मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ जिले में हुआ था। राजेश जोशी समकालीन कविता का सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं।

2. शिक्षा- एम.एस.सी (जीव विज्ञान) और एम.ए (समाजशास्त्र)। पढ़ाई के बाद पत्रकारिता की शुरुआत इन्होंने की। अध्यापन कार्य में भी संलग्न रहे।

3. कविताओं के अलावा उन्होंने लेख, नाटक, नाट्यरूपान्तरण एवं पटकथा लेखन का कार्य भी किया है।

4. भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी लेखन। उनकी कविताओं का अनुवाद जर्मन, रूसी और अंग्रेजी भाषा में भी हुआ है।

5. भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी लेखन। उनकी कविताओं का अनुवाद जर्मन, रूसी और अंग्रेजी भाषा में भी हुआ है।

6. कुछ प्रमुख रचनाएँ- एक दिन बोलेंगे पेड़, मिट्टी का चेहरा, नेपथ्य में हंसी, दो पंक्तियों के बीच (काव्य-संग्रह)। सोमवार और अन्य कहानियां, कपिल का पेड़ (कहानी-संग्रह)। जादू जंगल, अच्छे आदमी, टंकारा का गाना (नाटक)।

7. पुरस्कार- साहित्य अकादमी पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, म.प. सरकार का शिखर पुरस्कार, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मुक्तिबोध पुरस्कार, पहल सम्मान, शमशेर सम्मान आदि।

8. उनके काव्य में युग-बोध,जन-संवेदना और मिट्टी की सोंधी सुगंध एक साथ समाहित है।

पाठ-परिचय

1. प्रस्तुत कविता के रचयिता राजेश जोशी हैं। इस कविता में बाल-श्रम की समस्या को उकेरा गया है।

2. कवि ने बाल-मजदूरी के कारण बच्चों से उनका बचपना छिन जाने की पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है।

3. आखिर वो कौन सी सामाजिक-आर्थिक स्थिति जिम्मेवार है जिसके कारण ये निरीह बच्चे इस छोटी सी उम्र में काम पर जाने के लिए विवश हैं।

4. क्या उनका मन खेलने का नहीं करता? क्या वह स्कूल जाना नहीं चाहते? इन सभी प्रश्नों के तह तक जाने का काम यह कविता करती है।

5. निश्चित रूप से यह कविता तथाकथित सभ्य कहे जाने वाले समाज की विद्रूपताओं और विसंगतियों को नग्न रूप में हमारे सामने प्रकट करती है।

6. बच्चों को देश का भविष्य कहा जाता है। यदि यह बच्चे पुस्तक, खिलौने और विद्यालय से दूर हैं तो देश या समाज की गति की सिर्फ कल्पना की जा सकती है।

© JCERT not to be republished

7. कवि ने कल्पना के द्वारा केवल इस बात की सम्भावना प्रकट की है की बच्चे काम पर जा रहे हैं, लेकिन वास्तविकता इससे अलग नहीं है। वास्तव में बच्चे काम पर जा रहे हैं।

8. आवश्यकता हैं की हम कारणों की पड़ताल कर इस सामाजिक समस्या को दूर करें ताकि उन बच्चों के चेहरे पर भी मुस्कान आ सके। वे भी अपने सपनों की ऊँची उड़ान भर सकें।

काव्यांश 1

1 कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं

सुबह सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं

हमारे समय की ये सबसे भयानक पंक्ति है यह

भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना

लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?

2. शब्दार्थ:- कोहरा-कुहासा, धुंध। भयानक-डरावना। विवरण-विस्तृत जानकारी, स्पष्ट करना।

3. प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' भाग 1 की 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता से लिया गया है।इसके रचयिता राजेश जोशी हैं। इन पंक्तियों में कवि बाल-श्रम की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि-

4. व्याख्या- ठंढ की ठिठुरन भरी सुबह में बच्चे काम पर जा रहे हैं। जिन बच्चों की अवस्था अभी खेलने-कूदने और पढाई करने की है वह आख़िरकार काम पर क्यों जा रहे हैं? यह हमारे समाज का एक भयानक सत्य है की बच्चे काम पर जा रहे हैं। कवि कहते हैं कि ये जो यक्ष प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है उसे समाज विवरण नहीं समझे, बल्कि इसे एक सवाल की तरह ले और सोचे की वे बच्चे जो शायद आगामी भविष्य के कर्णधार हो सकते थे। वह किन कारणों से आज ठंढ की ठिठुरन को सहते हुए काम पर जाने के लिए विवश हैं।

5. विशेष:- कवि ने काम करने वाले बच्चों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है।

अभिधा शब्द शक्ति और प्रसाद गुण विद्यमान है।

अतुकांत शैली का प्रयोग है।

काव्यांश 2

1. क्या अन्तरिक्ष में गिर गयी हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गयी हैं

सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन

खत्म हो गये हैं एकाएक

© JCERT not to be republished

2. शब्दार्थ:- अंतरिक्ष-आकाश। दीमक-चींटी की तरह का एक सफ़ेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लगकर उन्हें खा जाता है। भूकंप-भूचाल, भूमि का डोलना। आँगन-घर के अन्दर का खुला स्थान, सहन।

3. प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' भाग 1 की 'बच्चे काम पर जा रहे हैं'

कविता से लिया गया है। इसके रचयिता राजेश जोशी हैं। बच्चों को काम पर जाते हुए देखकर कवि मन हताशा और निराशा से भर उठता है।

4. व्याख्या:- कवि के मन में बच्चों को काम पर जाते हुए देखकर कई सारे प्रश्न एक साथ उठने लगते हैं। कवि कहते है कि क्या बच्चों के खेलने की सारी चीजों को आसमान ने निगल लिया है? क्या उनकी सारी किताबें समाप्त हो गयी हैं या उसे दीमकों ने अपना ग्रास बना लिया है? क्या उनके सारे खिलौने किसी पहाड़ के नीचे दब गए हैं? क्या बाल-शिक्षा से संबंधित सारी इमारतें (विद्यालय, मदरसा आदि) भूकंप के नीचे दब गयी हैं? क्या बच्चों के खेलने के लिए सारे मैदान, बगीचे और आँगन में कोई स्थान नहीं बचा? आखिर क्यों? ये सारे प्रश्न कवि के कोमल मन को बेचैन करते रहता है।

5. विशेष:- कवि का बच्चों के प्रति संवेदना का भाव व्यंजित हुआ है।

प्रश्न शैली से कविता में विशेष भाव व्यंजित हुआ है।

बच्चों के बचपना छिन जाने से कवि की आत्मा बहुत दुखी होती है।

काव्यांश 3

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ?

कितना भयानक होता अगर ऐसा होता

भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हजारों सडकों से गुजरते हुए

बच्चे, बहुत छोटे छोटे बच्चे

काम पर जा रहे हैं।

2. शब्दार्थ:- पंक्ति-कतार। एकाएक-अचानक। हस्बमामूल-यथावत।

3. प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' भाग 1 की 'बच्चे काम पर जा रहे हैं'

कविता से लिया गया है। इसके रचयिता राजेश जोशी हैं। कवि बच्चों के भविष्य के प्रति चिंता प्रकट करते हुए कहते हैं कि-

4. व्याख्या:- कवि का कहना है जब बच्चे से गेंद, किताब और खेलों को छिन कर काम पर लगा दिया जायेगा तो फिर संसार में कुछ भी शेष नहीं रह जायेगा। कवि के अनुसार बचपन खेल-कूद, पढाई-लिखाई एवं बच्चों के मानसिक विकास का काल होता है। इस अवस्था में यदि बच्चे काम पर जा रहे हैं तो निश्चित रूप से यह एक विचारणीय विषय है। समाज का यह कर्तव्य है कि बाल-श्रम

© JCERT not to be republished

की रोकथाम के लिए कुछ ठोस कदम उठाये जाएँ।

5. विशेष:- 'बच्चे', 'बहुत छोटे छोटे बच्चे' में अनुप्रास अलंकार है।

बाल-श्रम को कवि ने एक सामाजिक चुनौती माना है।

भाषा सहज, सरल अभिधा शब्द शक्ति से युक्त है।

प्रश्न -अभ्यास

1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे व्यक्त कीजिये।

उत्तर:- कविता की पहली दो पंक्तियों को पढने के बाद मन में उन बच्चों के प्रति करुणा और दया का भाव उठता है। इस कारन से की जिन बच्चों की उम्र अभी खेलने कूदने की है इस अवस्था में वो काम कर रहे हैं। पेट की चिंता उनको इस कडकडाती ठंढ में भी काम करने के लिए मजबूर कर रही है। कब इनकी दुर्दशा समाप्त होगी और उन्हें भी अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने और पढने का अवसर प्राप्त होगा? ऐसा ही चित्र हमरे मन में उभरता है।

2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए की 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर:- कवि की दृष्टि में बच्चों का काम पर जाना विवरण नहीं बल्कि एक सवाल है। क्योंकि विवरण से किसी के मन में इन बच्चों के प्रति लगाव या संवेदनशीलता को उत्पन्न नही किया जा सकता। जबकि इसे प्रश्न के रूप में रखने से जवाब मिलने की आशा होती है। इनकी मूल समस्या की जड़ पर प्रहार होता है और उससे समाधान निकलने की सम्भावना बढ़ जाती है।

3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे क्यों वंचित हैं?

उत्तर:- सामाजिक असंतुलन और गरीबी के कारण बच्चे सुविधा और मनोरंजन के साधनों से वंचित हैं। हमारे देश में करोड़ों परिवार ऐसे हैं जो दो वक्त की रोटी का भी जुगाड़ नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में उनके बच्चों के लिए सुविधा और मनोरंजन केवल ख्याली पुलाव के समान है।

4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर:- आज के भौतिकतावादी युग में मनुष्य संकीर्ण विचारधारा से ग्रसित और संवेदनहीन हो चुका है। उन्हें केवल स्वयं के फायदे और नुकसान की चिंता है। उन्हें लगता है काम कर रहा बच्चा उनका अपना नहीं है तो वह

© JCERT not to be republished

उसके दुःख-सुख की चिंता क्यों करें? यही सोच सारी समस्या की जड़ है। सामजिक जागरूकता का अभाव भी इस उदासीनता का एक प्रमुख कारण हो सकता है।

5. आपने अपने शहर में बच्चों को कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?

उत्तर:- हम लगभग प्रतिदिन ही बच्चों को कभी चाय की दुकान पर कप-प्लेट धोते हुए, कभी होटलों में वेटर का काम करते हुए, कभी सडक किनारे कूड़ा बीनते हुए, भट्ठों पर ईंट ढोते हुए और सब्जी मंडियों में मजदूरी करते हुए देखते हैं।

6. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर:- निश्चित रूप से बच्चों का काम पर जाना एक हादसे के समान ही है। किसी भी देश या समाज का आगामी भविष्य बच्चों से ही निर्धारित होता है और जब यही बच्चे अपने जीवन की मुलभूत सुविधाओं से वंचित रहेंगे तो स्वाभाविक है कि उनका शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध होगा और वे अच्छे नागरिक नहीं बन पाएंगे। उनकी कोमलता, निरीहता और नटखटपन काम के बोझ तले दब कर रह जाएगी। यह सब होना किसी समाज और धरती के लिए किसी हादसे से कम नहीं है।

© JCERT not to be republished

Notes

© JCERT
not to be republished